नामांक Roll No.

No. of Questions — 14

SS—21—Hindi Sah. (Supp.)

No. of Printed Pages — 7

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2013
SENIOR SECONDARY SUPPLEMENTARY EXAMINATION, 2013

हिन्दी साहित्य

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें ।

(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं ।

(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें ।

(4) जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें ।

(5) उत्तर यथासम्भव निर्धारित शब्द-सीमा में ही सुपाठ्य लिखें ।

खण्ड - अ

1. निम्न पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा 20 से 40 शब्द)

जो खो न सकेगा अपने को
वह बीज बनेगा क्या तरुवर
अपनी आँखों से देखूँ
किसलय सुमन मनोहर फल,
यह बात सोचता बीज अगर
यह गलत चीज यह छाया छल,
विश्वास न जिसको मिटने में
वह छू सकता है कब अम्बर ?
जब तक कि अहम् के गुदमैले
छिलके से चिपटा अन्तर मन
तब तक विकास केवल सपना
तुम देखो चाहे मूँद नयन,
मिट्टी के नीचे ही दबकर
उठ सकते मिट्टी के ऊपर !

(क) कौनसा बीज वृक्ष बनता है ? 1

(ख) बीज को क्या सोचना गलत है ? 1

(ग) 'अहम् के गुदमैले छिलके' के भाव को स्पष्ट कीजिए । 2

(घ) विकास का सपना कैसे पूरा किया जाता है ? 2

(ङ) उक्त पद्यांश में मनुष्य को क्या संदेश दिया गया है ? 2

2. निम्न गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा 20 से 40 शब्द)

हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में तिलक ने 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा इसी तथ्य को ध्यान में रखकर दिया था कि स्वतंत्रता एक नैसर्गिक मूल्य है । नैसर्गिक मूल्य की रक्षा भी की जाती है और उसका अनुभव भी किया जाता है । मानव द्वारा व्यवस्था हेतु निर्मित प्रतिबंधों के बीच ही मानव के विकास की समस्त संभावनाएँ छिपी हुई हैं । यदि सामाजिक व्यवस्था का अभाव हो जाए और एक जंगली जीवन पद्धति मात्र रह जाए तो व्यक्तित्व विकास के वे सब सोपान ढह जाएँगे, जिससे मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा संभव होती है और जिन्हें पाने के लिए मनुष्य करोड़ों वर्षों से अनेक स्तर पर सक्रिय रहा है । इसलिए नैसर्गिक मूल्य के रूप में स्वतंत्रता को स्वयमेव कुछ प्रतिबंधों में बँधना पड़ेगा । ये प्रतिबंध मनुष्य के चतुर्दिक् विकास में रुकावट उत्पन्न नहीं करेंगे, क्योंकि इनका सृजन ही मानवीय विकास के लिए किया गया है । इसी आधार पर ग्रीन ने कहा था, 'जिस प्रकार सौन्दर्य कुरूपता के अभाव का नाम नहीं होता उसी प्रकार स्वतंत्रता भी प्रतिबंधों के अभाव का नाम नहीं है ।'

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । 1

(ख) ''नैसर्गिक मूल्य'' का अर्थ स्पष्ट कीजिए । 1

(ग) मानव-निर्मित प्रतिबंधों से स्वतंत्रता बाधित नहीं होती । क्यों ? 2

(घ) ''सौन्दर्य कुरूपता के अभाव का नाम नहीं होता ।'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए । 2

(ङ) 'चतुर्दिक्' का समानार्थी शब्द लिखते हुए उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए । 2

खण्ड - ब

3. किसी **एक** विषय पर लगभग 450 शब्दों में निबंध लिखिए : 8

(i) विज्ञापनों की मृग-मरीचिका

(ii) दूरदर्शन के कार्यक्रमों की उपादेयता

(iii) चाँदनी रात में नौका-विहार

(iv) भारतीय लोकतंत्र की दशा एवं दिशा ।

4. जिला शिक्षा अधिकारी, उज्जैन की ओर से सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद् , भोपाल को एक कार्यालयी पत्र लिखिए जिसमें शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामगढ़ में परीक्षा केन्द्र खोलने की अनुशंसा की गई हो । 4

अथवा

जिला कलैक्टर, विजयगढ़ की ओर से जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में जनसंख्या एवं पर्यावरण जागरूकता के लिए कार्यक्रम आयोजित करने संबंधी पत्र का प्रारूप लिखिए ।

5. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 - 25 शब्दों में लिखिए :

(क) जनसंचार के कोई दो माध्यम लिखिए । 1

(ख) समाचार पत्र के संबंध में 'डेडलाइन' का क्या अर्थ है ? 1

(ग) इंटरनेट पत्रकारिता से क्या आशय है ? 1

(घ) दूरदर्शन की खबरों के दो चरण लिखिए । 1

6. कविता रचना के उपकरणों को स्पष्ट कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द) 4

खण्ड - स

7. निम्न पद्यावतरणों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

(उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द)

और यह कैलेंडर से मालूम था
अमुक दिन अमुक बार मदनमहीने की होवेगी पंचमी
दफ्तर में छुट्टी थी — यह था प्रमाण
और कविताएँ पढ़ते रहने से यह पता था
कि दहर-दहर कहीं ढाक के जंगल
आम बौर आवेंगे
रंग-रस-गंध से लदे फँदे दूर के विदेश के
वे नन्दन वन होवेंगे यशस्वी
मधुमस्त पिक भौंर आदि अपना-अपना कृतित्व
अभ्यास करके दिखावेंगे
यही नहीं जाना था कि आज के नगण्य दिन जानूँगा
जैसे मैंने जाना, कि बसन्त आया ।

अथवा

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाइ ऐसी मति उदित उदार कौन की भई ।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज तपवृद्ध कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई ।
भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है, 'केसोदास' क्यों हू न बखानी काहू पै गई ।
पति बनैं चारमुख पूत बनैं पाँचमुख नाती बनैं षटमुख तदपि नई-नई ॥

8. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए :

(क) यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाउ ।
मकु तेहि मारग होइ परौ, कंत धरैं जहँ पाउ ॥
पंक्तियों में निहित भाव-सौन्दर्य लिखिए । 2

(ख) हेम कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे ।
मदिर ऊँघते रहते जब-जगकर रजनी भर तारा ।
पंक्तियों का शिल्प-सौन्दर्य लिखिए । 2

9. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए :

(क) ''मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वन्द्वी या हिस्सेदार नहीं ।'' यह कथन किसका और किसके प्रति है ? 2

(ख) एक बूँद सहसा उछली सागर के झाग से;

रंग गई क्षणभर ढलते सूरज की आग से ।

उक्त पंक्तियों में कवि ने जीवन में किसके महत्त्व को प्रतिष्ठापित किया है ? 2

खण्ड - द

10. निम्न गद्यांशों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द) 7

कवि अपनी रुचि के अनुसार जब विश्व को परिवर्तित करता है तो यह भी बताता है कि विश्व से उसे असंतोष क्यों है, वह यह भी बताता है कि विश्व में उसे क्या रुचता है जिसे वह फलता-फूलता देखना चाहता है । उसके चित्र के चमकीले रंग और पार्श्वभूमि की गहरी काली रेखाएँ दोनों ही यथार्थ जीवन से उत्पन्न होते हैं । इसलिए प्रजापति — कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर है और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं । इसलिए मनुष्य साहित्य में अपने सुख-दुख की बात ही नहीं सुनता, वह उसमें आशा का स्वर भी सुनता है । साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है ।

अथवा

दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं । सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुखी वह है जिसका मन परवश है । परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ-हजूरी । जिसका मन अपने वश में नहीं है वही दूसरे मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है । कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है । वह वशी है । वह वैरागी है । राजा जनक की तरह संसार में रहकर, संपूर्ण भोगों को भोग कर भी उनसे मुक्त है । जनक की ही भाँति वह घोषणा करता है — 'मैं स्वार्थ के लिए अपने मन को सदा दूसरे के मन में घुसाता नहीं फिरता, इसलिए मैं मन को जीत सका हूँ, उसे वश में कर सका हूँ ।'

11. निम्न में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(उत्तर सीमा लगभग 50 शब्द) $2 \times 2 = 4$

(क) 'बालक बच गया' लघु निबंध में किस मनोवैज्ञानिक तथ्य को उजागर किया गया है ?

(ख) 'दूसरे की मुद्रा की झनझनाहट गरीब आदमी के हृदय में उत्तेजना उत्पन्न करती है ।' उक्त कथन का सन्दर्भ लिखते हुए इसका आशय स्पष्ट कीजिए ।

(ग) सच्चे साहित्यकार को किस प्रकार के साहित्य की रचना करना चाहिए ?

12. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' या पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का साहित्यिक परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 4

खण्ड - य

13. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए : $4 \times 2 = 8$

(क) 'लेकिन अंधे भिखारी के लिए दरिद्रता इतनी लज्जा की बात नहीं है, जितना धन ।' इस कथन के निहितार्थ को स्पष्ट कीजिए ।

(ख) चिड़िया और गीध की कहानी के माध्यम से भूपसिंह क्या बताना चाहता था ?

(ग) '' 'बिस्कोहर की माटी' अध्याय में वात्सल्य भाव की मनोरम झाँकी देखने को मिलती है ।'' स्पष्ट करें ।

(घ) 'मन से तो किशोर हो सकते हो । शरीर फिर वैसा फुर्तीला, लचीला और गर्वीला नहीं हो सकता ।' 'अपना मालवा: खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में' लेखक ने यह वाक्य किस सन्दर्भ में कहा है ?

(ङ) 'उसके गुरु तो तुम्हीं हो, तुम्हीं ने मंत्र दिया होगा ।' 'सूरदास की झोपड़ी' अध्याय के इस कथन में किसने किस पर क्या व्यंग्य किया है ?

14. 'अपना मालवा : खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में' आलेख पर्यावरण विनाश की गंभीर समस्या से प्रेरित है । स्पष्ट कीजिए । 6